RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : MISC-II/CPM/04/KPHO/2017-19
प्रधान डाकघर कानपुर–डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/–

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

फरवरी–2018 | वर्ष – 10 | अंक : 01 | मूल्य : 5/–

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (इं. जल संस्थान), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश : सुनीता धीमान, 414/12, शास्त्री नगर, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 9450871741
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी–5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल :
पुष्पेन्द्र गौतम हिन्दुस्तानी, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम–सराय, औरंगाबाद, पो.–बहादुरगढ़,जिला–झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.–रामटौरिया, जिला–छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य :
दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट–III, बदरपुर, नई दिल्ली–44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.–1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला–अलवर–301001, मो. : 09887512360, 0144–3201516
चिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला–अलवर, मो.–09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.–08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला–महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा–नवीन मार्केट, कानपुर
खाता सं.–33496621020 • IFSC CODE-SBIN0005307

अपराधीकरण का जातिशास्त्र

भारत के राजनीतिक दलों के चेहरे–चाल–चरित्र से हम सब परिचित हैं, अतः असामाजिक तत्वों के समक्ष उनके घुटने टेक देने की घटना से हमें हतप्रभ होने की जरूरत नहीं है। हतप्रभ तो हमें होना चाहिए भारत के प्रबुद्ध वर्ग से, जो चिंतन के मामले में इतना खोखला हो चुका है कि इस प्रश्न पर विचार की मांग ही नही कर रहा है कि आखिर आपराधिक चरित्र के उम्मीदवार चुनाव जीत क्यों जाते हैं? तेजी से स्थापित होती जा रही इस नयी राजनीतिक संस्कृति का सामाजिक आधार क्या है? बगैर इस मौलिक गुत्थी को समक्षे राजनीति के अपराधीकरण को समझने एवं रोकने का प्रयास कुछ वैसा ही होगा, जैसे नदी–किनारे खूटें से बंधी नाव की रस्सी को खोले बगैर किसी नाविक द्वारा खेने का प्रयास।

भारत का समाज विडम्बनाओं से भरा है। यहां का प्रबुद्ध तबका, खासकर सिद्धान्तकार एवं राजनीतिक टीकाकार, अपने सिद्धांतो के निर्माण एवं टिप्पणियों में समाज के वर्ग–जातिगत चरित्र को नजरंदाज करते हैं और प्रायः गलत निष्कर्ष निकाल बैठते हैं। भारतीय समाज में हो रहे चारित्रिक बदलावों के कुछ सूचकांकों पर दृष्टिपात कर लेना उचित होगा। करीब सत्तर के दशक तक मदिरा व्यवसाय पर जायसवालों का प्रभुत्व था। वह प्रभुत्व जब काफी हद तक घट गया है क्योंकि मदिरा की दुकान अब वही चला सकता है जो स्वंय बाहुबली हो तथा अपराध जगत् के प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हो। सत्तर के दशक तक, जिसमें भी बस या जीप खरीदने की ताकत थी, वह यातायात उद्योग को सहज ढंग से चला लेता था। अब, जिसके पास बाहुबल है, मरने–मारने की सहज प्रवृत्ति है, वही यातायात उद्योग में टिक सकता है। सत्तर के दशक तक सड़क एवं भवन निर्माण का कार्य पेशेवर ठेकेदारों के आधिपत्य में था, अब इस व्यवसाय पर पेशेवर अपराधियों का आधिपत्य हो गया है। सत्तर के दशक तक कस्बों में दुकानदारों को अपने व्यवसाय की सुरक्षा के लिए पुलिस को टैक्स देने पड़ते थे, अब वह भूमिका स्थानीय बाहुबली निभा रहे हैं। सत्तर के दशक तक दलितों का नरसंहार नहीं होता था, इसकी शुरूआत 1977 में बेलछी से हुई।

वर्तमान भारतीय समाज आजादी के समय से भिन्न हो चुका है, यह एक निर्विवाद सच्चाई है। पर इस सच्चाई का भौतिक आधार क्या हो सकता है? इस प्रश्न पर भी गौर करना जरूरी है। आजादी के समय के भारत की सम्पदा, संस्थान, राजनीति एवं संस्कृति पर द्विज समाज का आधिपत्य था। समाज का सर्वांगीण नेतृत्व समाज के लगभग पंद्रह फीसदी द्विज समाज के हाथ में था। तब भारत की मुख्य सम्पदा भूमि थी, जिस पर द्विजों का आधिपत्य था। वे ही जमींदार हुआ करते थे। अतः जमींदारी उन्मूलन स्वतंत्र भारत का सबसे बड़ा राजनीतिक फैसला था, जिसने भारत के तमाम सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य को निर्णायक ढंग से प्रभावित कर दिया। जवाहरलाल नेहरू का जमींदारी उन्मूलन जमींदारों को तो जमीन से बेदखल किया, पर एक नये तरह के सामन्ती युग के निर्माण की आधारशिला भी रख दी। चूंकि आज भी भारत का हर दूसरा दलित भूमिहीन, कृषि मजदूर है, मात्र पच्चीस प्रतिशत दलित जोतदार हैं, जिससे यही सिद्ध होता है कि जमींदारी उन्मूलन मूलतः 'जमींदार उन्मूलन' रहा। वह जमीन उग्र–शूद्रों के हाथ लग गयी जो जमींदारी प्रथा के समय द्विजों के काश्तकार थे। चूंकि शूद्र द्विज जमींदारों के प्रभुत्व से मुक्त हो गये, अतः वे राजनीतिक रूप से भी मुक्त हो गये। सत्तर के दशक तक जब उग्र–शूद्र जातियां भूमि पर अच्छा–खासा अधिकार प्राप्त कर लिया था, उसी समय हरित–क्रांति का आगमन होता है, जिसकी राजनीतिक अभिव्यक्ति गैर–कांग्रेसवाद के 1977 के सफल चुनावी अभियान के रूप में होती है। ग्रामीण भारत में पराजित द्विज नगरों की ओर मुखातिब होते हैं तथा सस्ती या मुफ्त बिजली, सस्ती या मुफ्त सिंचाई, सस्ते उर्वरक तथा हजारों करोड़ रूपयों के अनाज के समर्थन मूल्य के चलते शूद्र कृषकों में समृद्धि आयी तथा वे स्वयं को नव–कुलक के रूप में स्थापित कर लेते हैं। इसी अचानक आयी समृद्धि तथा परंपरागत बाहुबल प्रवृत्ति के बलबूते शूद्रों ने द्विजों से अधिक मुनाफे वाले मदिरा, यातायात, ठेकेदारी जैसे पेशे भी छीन लिये। अब उग्र–शूद्रों के पास अतिरिक्त भूमि, अतिरिक्त पैसे एवं अतिरिक्त समय था, जिसके कारण इन्हें रंगदारी द्वारा द्विजों से सामाजिक सत्ता भी छिनने में सहूलियत मिल गयी, जिसकी आखिरी परिणति इनके राजनीतिक उत्कर्ष में हुई। तथाकथित तीसरे मोर्चे के सांसदों एवं विधायकों का निजी ब्यौरा देखा जाए, तो इसमें से अपवाद स्वरूप ही शिक्षण, सामाजिक कार्य संस्थान निमार्ण जैसे पेशों से जुड़े होगें। फिर इनके विपरीत द्विज एवं दलित पार्टियों या द्विज या दलित समाज से आने वाले कम ही ऐसे सासंद या विधायक होगें जो ठेकेदारी, गुंडागर्दी, मदिरा, व्यवसायी, प्रापर्टी डीलिंग आदि पेशों से सम्बन्ध रखते हों। पर, ऐसा भी नहीं है कि गैर–शूद्र पार्टियां अपराधी प्रवृत्ति के नेताओं से मुक्त हों। अब तो स्थिति ऐसी पैदा हो रही है जहां द्विज एवं दलितों से भी वही सांसद व विधायक बनेंगे जिनका पेशेवर चरित्र संदिग्ध होगा, क्योंकि वर्तमान भारत का ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण सम्पदा, ग्रामीण संस्थाएं एवं ग्रामीण संस्कृति शूद्र आधिपत्य में आ चुकी है जहां 'डी–डेमोक्रेटाइजेशन' (अ–लोकतंत्रीकरण) की प्रवृत्ति ऐतिहासिक विरासत के चलते तय है।

अब प्रश्न यह उठता है कि तमाम राजनीतिक दल राजनीति के अपराधीकरण को रोकने की किसी भी सार्थक मुहिम के पक्षधर क्यों नहीं बन पा रहे हैं? उत्तर स्पष्ट है, अपराधीकरण को रोकने की किसी सार्थक पहल में शामिल होने का मतलब शूद्र समाज को ललकारने जैसा होगा। यद्यपि उग्र–शूद्र, भारत की कुल जनसंख्या की एक–चौथाई हिस्से के लगभग हैं, पर इनकी ग्रामीण सम्पदा एवं संस्थाओं पर आधिपत्य एवं शेष अन्य शूद्र यानी अति पिछड़े वर्ग को भी द्विज समाज के विरूद्ध भड़काकर एकजुट कर लेने की संभावना के चलते, द्विज पार्टियां भी लगभग 55 प्रतिशत शूद्रों का कोपभाजन नहीं बनना चाहती है।

भारत के वर्तमान राजनीतिक दल शूद्र जातियों की चुनावी ताकत को जानते हैं तथा अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए राजनीति के अपराधीकरण के विरूद्ध किसी भी सार्थक पहल में शामिल नहीं होना चाहते। वर्तमान राजग सरकार में शूद्रो की अच्छी भागीदारी है तथा पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत के चारों राज्यों में कांग्रेस मूलतः शूद्रों की पार्टी है। समकालीन भारत का लोकतंत्र शूद्रों के राजनीतिक उत्कर्ष की काली छाया से घिर चुका है, आने वाले दिन और भी संकटमय होने की संभावना है।

साभार – भारतीय समाज और जातिगत अत्याचार
(पृ.सं. 30 से 32 तक)
चन्द्र भान प्रसाद

हमारे नाग देवता

जिनके बारे में धर्मग्रंथों को आधार बनाकर मनगढ़ंत बातें फैलाई गई हैं, लेकिन विज्ञान ने जो सत्य उद्घाटित किए वे कम आश्चर्यजनक नहीं?

संसार में सर्पों के बारे में बड़ी भ्रांतियां हैं। ग्रीक लोगों में औषधि का देवता एसक्यूलेपियस माना जाता था। उसका चिह्न छड़ी में लिपटा सर्प था। भारत में तो नागराज के मंदिर स्थापित हैं, जहां प्रतिदिन नागपूजा होती है तथा भोग लगाए जाते हैं। नागपंचमी के दिन सर्प दर्शन तथा उन्हें सपेरों द्वारा दुग्ध पान कराना धार्मिक कृत्य समझा जाता है। शेषनाग के फन पर पृथ्वी का टिका रहना तथा कृष्ण द्वारा कालिय नामक सर्प का दमन धार्मिक रूप से सर्प की महत्ता को कहीं अधिक बढ़ा देता है।

भारत में सर्पों के विषय में अनेक प्रकार की मनगढ़ंत, किंवदंतियां और मिथ्या बातें प्रचलित हैं–जैसे; पुंछ में विष, गाय के पैरों में लिपट कर स्तनपान, नेत्रों द्वारा मंत्रमुग्ध करना, बैन (बीन) पर खेलना, काटने वाले सर्प को मंत्र द्वारा बुलाना और सर्पदंश से पीड़ित व्याक्ति के विष को चूसने के लिए बाध्य करना, ढाक (थाली) बजाना और मंत्र के द्वारा सर्पदंश का उपचार, मृत सर्प के जोड़े द्वारा प्रतिहिंसा, सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति का खेलना, कंठमाला के रोगी को पिछले जन्म का सर्पदंश से मरा व्याक्ति समझना इत्यादि, इस लेख द्वारा सर्प के जीवन के विषय में पाठकों को यथार्थ ज्ञान, जो विज्ञान और सत्यता पर आधारित हैं, बताना हैं।

अनुमान है, संसार में लगभग ढाई हजार प्रकार के सर्प हैं जिन में लगभग साढ़े तीन सौ जातियां भारत में पाई जाती हैं, इस के जीवन को प्रकृति की विशेष देन है, सर्प कभी आंखें बंद नहीं करता क्योंकि इस के पलक नहीं होते, कानों के छिद्र नहीं होते, जिह्वा पतली, लम्बी और दुफांकी होती है, बिना पैरों के तेज दौड़ता है, भोजन मे लिए स्वयं शिकार करता है और मुंह के आकार से कहीं बड़ा ग्रास निगलने की क्षमता रखता है।

एशिया के भीमकाय सर्प चत्ती (पेथन) बड़े –बड़े पशुओं को ऐंठ कर मार डालते और समूचे हिरन तक को निगल जाते हैं। कुछ सर्प; जैसे – अमरीका का रैटिल सर्प और भारत का काला नाग, तो इतने विषैले होते हैं कि सर्पदंश के बाद थोड़े समय में ही प्राणांत हो जाता है। कुछ विषरहित सर्पों की पाचन शक्ति इतनी प्रबल होती है कि मुलायम हड्डियां भी भस्म हो जाती हैं। अतएव यह कोई आश्चर्य नहीं कि एक जीव को हो इतना विलक्षण, विचित्र और भयानक हो उस के विषय में ऊलजलूल बातें गढ़ी जाएं और चतुर व्यक्ति अनपढ़ लोगों के झूठे विश्वास के कारण अपने जीविकोपार्जन का साधन बनाएं।

यह असत्य है कि सर्प की त्वचा चिकनी और फिसलनी होती है। वास्तव में वह शुष्क और अत्यंत स्वछंद होती है, सर्प की पुंछ में विष नहीं होता। सर्प बेलन की भांति न लुढ़क सकता है और न नेत्रों अथवा श्वास द्वारा शिकार को आकर्षित ही कर सकता है। लपलपाती जिह्वा हानि रहित हैं। सर्प न सामूहिक जीवन का अभ्यस्त है और न निर्धारित पति–पत्नी के रूप में जोड़ा होता है, अतएव एक के मरने पर उस के जोड़ीदार द्वारा बदला लेने की बात भी मिथ्या है,

सर्प पानी चूस कर नहीं पी सकता, अतएव गाय के स्तन पान की धारणा भी असत्य है, कान न होने से ध्वनि को सुनने में असमर्थ है, अतएव सपेरे के बैन बाजे (बीन) को न सुन सकता है और न मंत्रमुग्ध ही होता है, जैसा कि सपेरे दिखाया करते हैं, सपेरे सर्प को पकड़ने के पश्चात उसे कपड़े, बैन या रस्सी द्वारा पीटते हैं और उस के विषदंश तोड़ देते हैं, इस से सर्प पर उन का आतंक छा जाता है, वह बाध्य हो जाता है कि वह क्रोधित अवस्था में फन को उठा कर उस के हाथों की गतिविधि से बचने के लिए एकाग्र हो कर उस की ओर ध्यान लगाए और मार से बचे।

बीन मे स्थान पर यदि सपेरे के हाथ में कोई लकड़ी या पुस्तक हो तो भी सर्प की यह प्रतिक्रिया होगी। कभी ध्यान दीजिए कि सपेरा खेल दिखाने से पहले पिटारा खोलते समय पिटारा थपथपाता है और बीन बजाने से पहले और बाद में भी सर्प को छेड़ता और क्रोधित करता रहता है। कुछ लोगों ने नए पकड़े गए काले नाग को कांच के संदूक में रख कर सपेरों द्वारा बिना छुए और छेड़े उन को बीन बजा कर मोहित करने का प्रयत्न किया, पर वे असफल रहे।

सर्पों के विषय में वास्तविकता किंवदंतियों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इस के पैर नहीं होते, फिर भी केंचुए (जिस का उस से कोई संबंध नहीं) के समान साधारण जीव नहीं, इस का जीवन बहुत विकासपूर्ण और जटिल होता है। यह फेफड़ों द्वारा सांस लेता है। इसी कारण वर्षा ऋतु में छिद्रों में पानी भर जाने के कारण बाहर निकलने के लिए विवश होता है। आवश्यकता पड़ने पर सभी सर्प तैर सकते हैं, पर जल के सर्पों को छोड़ कर बाकी भूमि पर ही रहते हैं।

इस के हृदय के तीन भाग होते हैं, शरीर के अंदर मेदा, पित्ताशय की स्थिति बड़ी विलक्षण है, इसे जीवित रहने के लिए स्वयं शिकार करना पड़ता हैं, शत्रुओं से लोहा या बचना पड़ता है, जब कि स्वयं वह एक तंग खाल में बंद है। अतएव प्रकृति ने इसे विशेष साधन और चातुर्य प्रदान किया है।

कान न होने के कारण सर्प ध्वनिरहित संसार में रहता है। उसे पृथ्वी की तरंगों का अपने स्नायुयों द्वारा (जो अत्याधिक क्रियाशील होती हैं) शीघ्र बोध हो जाता है और वह सतर्क हो जाता हैं बंदूक की ध्वनि सुनने में वह असमर्थ है, पर पृथ्वी पर हलके पैर की धमक का उसे ज्ञान हो जाता है, उस की आंखो की पुतलियां सूक्ष्मदर्शी यंत्र के समान छोटी वस्तु पर भी केंद्रित हो जाती है, बैन (बीन) के साथ फन का आंख मिला कर हिलाना, चोट से बचाना और चोट करना कभी देखा जा सकता है। रात्रि में विचरने वाले सर्पों की पुतलियां बिल्लियों के समान अंधेरे में फैलने वाली होती हैं

सर्प की जिह्वा हाथ का कार्य करती है. जो नई वस्तु उस के सामने आती है, वह उसे फन द्वारा धीरे से छूता है और पता लगाता है, इसी के द्वारा वह सूघंने का भी कार्य भी करता है, सर्प के लिए सुगंध कोई आकर्षण की वस्तु नहीं, 'चन्दन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग' केवल कवि की अतिशयोक्ति ही है। जिह्वा की दुफांकी नोंक छोटी वस्तु को भी, जो केवल सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा ही देखी जा सकती हैं, आकाश, भूमि और पानी से उठा सकने की क्षमता रखती हैं, जिह्वा को मुंह में ले जाने के पश्चात सर्प दुफांकी सिरों को दो छोटे गद्दों में, जो तालू में होते हैं, ले जाता है। वहां ज्ञान कोष होते हैं, इन गद्दों द्वारा सर्प को गंध तथा वातावरण का ज्ञान हो जाता है।

नाक के अंतिम छोर से ले कर पूंछ की नोक तक एकदूसरे पर चढ़े हुए और कुछ उभरे हुए छिलके (स्केल्स) सांप को बड़ी मजबूत खाल प्रदान करते हैं, ये छिलके मछली के छिलकों से भिन्न होते हैं, इसी त्वचा का एक भाग, जो पारदर्शी होता है, आंखों के ऊपर रहता है, इस की रीढ़ की बनावट ऐसी होती है कि आवश्यकता पड़ने पर उस में बहुत लचक पैदा की जा सकती है और शिकार को जोर से ऐंठ सकती है, रीढ़ के प्रत्येक गुरिए के साथ पसलियां जुड़ी रहती हैं।

सर्प की छाती में अलग कोई अस्थि नहीं होती, पसली कार्टिलेज और शक्तिशाली मांसपेशियों द्वारा नीचे की ओर किसी छिलके के साथ जुड़ी होती है, यह सर्प की गति और रेंगनें का रहस्य है, आगे सरकते समय सर्प पसली को आगे की ओर टेढ़ा करता है, पृथ्वी को आंकड़े की तरह नीचे के छिलकों द्वारा जकड़ता है फिर पसलियों के पीछे की ओर झटका देता है, दौड़ में गति लाने के लिए सर्प लहराता हुआ आगे बढ़ता है इस प्रकार सर्प प्रत्येक पसली, मांसपेशी और त्वचा (जो नीचे की ओर होती है) उपयोग में लाता है, जहां आगे बढ़ना या सरकना संभव न हो तो सर्प सिर के भाग को आगे बढ़ाता है, वस्तु को दृढ़तापूर्वक पकड़ता है और सारे शरीर को आगे की ओर खींचता है, पेड़ो पर चढ़ते समय सर्प इसी क्रिया को अपनाता है।

सर्प स्वयं बिल नहीं खोदते और न उन का कोई निश्चित निवास स्थान ही होता हैं वे दीमकों, चूहों तथा अन्य जीवों द्वारा खुदे बिलों में या पेड़ के खोखलों में रहते हैं, पूंछ शरीर का चौथाई भाग होती है, पानी में रहने वाले सर्पों की दुमें चपटी होती हैं, जो तैरने में पतवार का काम करती हैं, वे बड़ी तेजी से तैरते और शिकार करते हैं, ऐसे सर्प प्रायः रंग पीले और विषरहित होते हैं, एक सर्प के एक से अधिक सिर होना, मुंछ होना, प्रकाश के लिए मणि होना अथवा गढ़ी संपत्ति के ऊपर निवास करना केवल कपोलकल्पित बातें हैं।

सर्प दो वर्ष की उम्र में पूर्ण रूप से युवा हो जाता है, भीमकाय अजगर–बोआ (अफ्रीका), पेथन (एशिया), एनाकौड़ा (अमरीका)– आकार में अत्याधिक बड़े और आकर्षक रंगों के होते है, वे 20 फुट से 32 फुट तक लम्बे होते हैं, एक 20 फुट लम्बा पेथन सर्प हरिण या मनुष्य को एक समय में खा सकता है, अजगर सर्प अपना शिकार दांतों से पकड़कर और अपने शरीर द्वारा ऐंठ कर मारते हैं और फिर उसे समूचा निगल जाते हैं, प्रत्येक प्रकार का सर्प शिकार का मुंह सब से पहले निगलता है। भारत के कुछ भागों में और अन्य कुछ देशों में मनुष्य सर्प को खाते हैं, चीन में तो अजगर का मांस बड़ा स्वादिष्ट माना जाता हैं ।

अधिकतर संपोले अंड़ों से उत्पन्न होते हैं परन्तु कुछ सशरीर जीवित भी माता के गर्भ से साथ आते हैं, एक बार में सर्पणी सैकड़ों अंडे–बच्चे देती है। अंड़े चिड़ियों के अंड़ों के समान चटखदार न हो कर कुछ लचीले होते हैं और पैदा होने के पश्चात आकार में बढ़ते रहते हैं, संपोले निकलते –निकलते तिहाई भाग बढ़ जाते हैं, कुछ बच्चे अंडों से चार दिन में निकल आते हैं, कुछ 90 दिनों में गरम देशों में सर्पिणी ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में गोबर की खाद या कूड़ा –करकट के निकट अंड़े देती हैं और उन से अगस्त– सितम्बर तक बच्चे पैदा होते रहते हैं, संपोले अंड़ों से मुर्गी के बच्चों के समान एक अस्थायी दांत द्वारा उत्पन्न होते हैं, पैदा होते ही वे दुनिया से निपटने योग्य हो जाते हैं, विषैली जाति के सर्प पैदा होते ही विषयुक्त होते हैं, अपनी देन को कुशलतापूर्वक व्यवहार में लाने की क्षमता रखते हैं।

लंबाई में सर्प प्रथम वर्ष में दुगना और द्वितीय वर्ष में तिगुना हो जाता है, तत्पश्चात यह क्रम शिथिल हो जाता है पर बढ़ने का यह क्रम जीवनपर्यंत जारी रहता हैं, सर्प की उमर प्रायः 20 या 25 वर्ष होती है, अजगर अवश्य 60 वर्ष के जीवित देखे गए है।

अंड़ों का बड़ा भाग कीड़े–मकोड़े नष्ट कर देते हैं, फिर संपोलों को बहुत से पशु पक्षी भी मार देते हैं, सामान्य मृत्यु से कहीं पहले ही सर्पों कर बड़ा भाग मनुष्यों, बड़े सर्पों, नेवलों तथा पक्षियों द्वारा नष्ट कर दिया जाता है, घायल अवस्था में उन्हें चींटियां व चींटे नष्ट कर देते हैं। हमें प्रकृति का आभारी होना चाहिए कि जहां सर्प इतनी

बड़ी संख्या में पैदा होते हैं वहां उन्हें बड़ी संख्या में नष्ट करने के साधन भी हैं।

सामान्यतः सर्प अपने जीवनकाल में निरंतर बढ़ता है। दूसरे जीवों के समान उस की त्वचा शरीर के साथ नहीं बढ़ती, अतएव बढ़ने की गति को रोकने वाली चुस्त खाल (केंचुली) को प्रति तीन या चार मास बदलना अनिवार्य ही है। नई त्वचा पुरानी के नीचे स्वयं पैदा होती है। ज्यों ही पुरानी त्वचा उतरनी होती है, सर्प अपना मुख किसी वृक्ष की जड़ या धारदार पत्थर से तब तक रगड़ता है जब तक उस में छिद्र न हो जाएं। सर्वप्रथम केंचुली में से वह अपना मुँह जिस में आंखों का भी भाग होता है, निकलता है, फिर पुठ्ठों को सिकोड़ कर, शरीर को रगड़कर पुरानी त्वचा को ढीला करता और उसे किसी वस्तु में फंसा कर पीछे की ओर इस प्रकार खींच देता है जैसा कि हम लोग पैर से मोजे उतारते समय खींच देते हैं, जिन दिनों नई त्वचा उत्पन्न होती है, सर्प की दृष्टि और गति क्षीण हो जाती है और जब तक लाचारी न हो वह अपने निवास में ही रहता हैं, केंचुली से निकल कर वह पहले के समान चुस्त और नए रंगों में चमकने लगता है।

सर्प मांसाहारी जीव है। वह मेंढक, चूहे, चीड़ियां, अन्य छोटे सर्प, अंडे इत्यादि खाता है, क्योंकि वह अनिश्चित समय तक शिकार पकड़ने में असमर्थ रहता है, प्रकृति ने उसे विलक्षण शक्ति दी है कि वह एक ही अवसर पर इतना आहार निगल सकता है कि फिर वह एक वर्ष तक निराहार रह सके।

सर्प के दांतों की छः कतारें होती हैं दो नीचे के जबड़े में, दो ऊपर के में और शेष दो मुंह के तालू में, दांत टूटने पर उसी स्थान पर नए दांत अपने आप निकल आते है। सूई से समान पैने दांत भीतर की ओर झुके होते हैं, अतएव शिकार का मुंह की पकड़ से निकलना या भाग जाना असंभव होता है।

सर्प के सिर की सारी हड्डियां गतिशील होती हैं और मांस पेशियों में ढीली फंसी रहती हैं, नीचे के ज़बड़े की हड्डियां ऊपर के जबड़े से अलग होती हैं। जबड़े का प्रत्येक भाग स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकता हैं । दोनों जबड़े लचकदार लिगामेंट द्वारा जुड़े होते हैं और इसी कारण वह इतना बड़ा ग्रास जो विश्वास से परे है, निगल जाता है।

विषैली जाति के सर्पों में एक या दो जोड़े बड़े दांत के होते हैं। वे या तो भीतर की ओर फैले होते हैं या पेंच के समान दांतेदार और गालों में स्थित विषकी थैलियों से जुड़े रहते हैं। काटते समय सर्प इन थैलियों में शक्तिशाली दबाव पैदा करता है और दांतों द्वारा शिकार में विष की धारा प्रविष्ट कर देता है। विषैले सर्प का यह कार्य फन उठाना, दांत मारना, विष प्रविष्ट करना और पहली अवस्था में आ जाना प्रकृति की देन व चुस्ती का अनुमान उदाहरण है, यह सब कार्य आधा से कम सेकंड समय में ही हो जाता है।

यह हाथ पैर रहित शिकारी अपने शिकार को विष द्वारा अपंग कर देता है और फिर वह भागने में असमर्थ हो जाता है। बड़े पशुओं या मनुष्यों को सांप प्रायः आत्मरक्षा हेतु ही काटते हैं। वे इस से अधिक कुछ नहीं चाहते कि उन्हें सताया व छेड़ा न जाए।

भारत में चित्तीदार (रूसैल्स वाइपर), धामन (सौस्केलड वाइपर) और काले नाग (ब्लैक कोबरा) अत्यधिक विषैले होते हैं। सर्पदंश से लाखों व्यक्ति प्रति वर्ष मृत्यु को प्राप्त होते है। चित्तिदार सर्प प्रायः गांवों के अंदर जहां चूहे, छिपकलियां इत्यादि सरलता से मिलते रहते है। अतएव व्यक्तियों की मृत्यु संख्या इन के कारण अधिक हैं।

काले नाग की लगभग दस जातियां हैं और वे प्रायः जंगलों में स्वच्छंदतापूर्वक विचरण करने में मग्न रहते है। इन की विशेषता यह है कि उन के फन होता है जो इच्छानुसार फैलाया, आगे बढ़ाया या उठाया जा सकता है, फन के ऊपर चश्मे की तरह का चिन्ह, जिसे गोखुर का चिन्ह भी कहते हैं, होता है। इन में सब से बड़ा और विषैला हमाद्रियाद कहलाता है जो पंदरह सोलह फुट तक लंबा होता है, इस की गति चुस्त, और फुंफार बड़ी तेज होती है, काले नाग प्रायः अन्य सर्पों का भक्षण करते है।

सांप का सबसे प्रबल शत्रु है नेवला। इस का युद्ध जीवन की बाजी हैं। यह जरूरी नहीं कि नेवला ही विजयी हो, चुस्ती और चालाकी में नेवला सांप से अधिक होता है। वह लपेट और फन की चोट से बचता हुआ दांए–बांए, आगे पीछे से कैंची से समान पैने दोंतो से तीव्र गति से वार करता हुआ सांप को इतना घायल कर देता है कि सर्प की मृत्यु निश्चित है। लेकिन यदि नेवला लपेट में आ जाए या सांप के विषैले दांत शरीर में घुस जाएं तो उस की मृत्यु निश्चित है। पर मरते–मरते भी नेवला सांप को इतना घायल कर देता है कि उस की मृत्यु चीटिंयों या अन्य कीड़ों द्वारा निश्चित है। यह कहावत है कि नेवला किसी जड़ी – बूटी की सहायता से सर्पदंश के प्रभाव से बच जाता है, प्रयोग द्वारा सिद्ध नहीं हुई।

सर्पदंश से पीड़ितों के लिए विज्ञानवेत्ता साधारण उपाय बताते हैं शांत रहो, उत्तेजित न हो, दौड़ो मत, शराब या उत्तेजन वस्तु का इस्तेमाल न करो, लेकिन विष धीरे–धीरे शरीर में फैलता है और इसी लिए उत्तेजना, परिश्रम और शराब इस की गति को बढ़ा देते हैं, सर्प प्रायः हाथ या पैर में काटता है।

विष न फैले, इस के लिए काटने के स्थान के ऊपर किसी कपड़े या रस्सी द्वारा बंध बांधिए, बंध अधिक कड़ा न बाधिए, ऐसा बांधिए कि एक उंगली त्वचा और बंध के बीच घुसेड़ी जा सके। प्रति दस मिनट बाद बंध को कुछ सेकेंडों के लिए ढीला कर देना चाहिए। बहुत कड़ा बंध बहुत देर तक बांधने से गैंग्रीन होने का अधिक भय रहता है और अंग भी नष्ट हो सकत है। बंध बांधने के पश्चात एक तेज चाकू या उस्तरे (तेज आग में गरम कर के शुद्ध किया हुआ) द्वारा दांत के घाव पर चौथाई इंच गहरा गुणा का चिह्न (x) बना कर रक्त के साथ जितना विष निकल सके निकल कर डाक्टर की सहायता प्राप्त करनी चाहिए।

भारत सरकार द्वारा मुबंई स्थित हाफकिंस इंस्टीट्यूट में विषधर सर्पों की फार्म है। उन के विष से सर्पदंश निरोधक औषधि तैयार होती और देश के अस्पतालों को भेजी जाती हैं। नाग का विष विदेशों को भी अनुसंधान और प्रयोग के लिए भेजा जाता है और विदेशी पूंजी अर्जित करता हैं। नाग का विष मिरगी, कैंसर के घावों में पीड़ा कम करने और हेमोफीलिया (चोट के बाद खून का न जमना जो कभी –कभी मृत्यु का कारण होता है) के इलाज के काम आता है।

साभार – कितने खरे हमारे आदर्श
(पृ.सं. 332 से 338 तक)
स. राकेश नाथ

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ...

जगदीश प्रसाद

कनिष्ठ सहायक हथकरघा एवं वस्त्राद्योग निदेशालय, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ...

कमलेश कुमार

अनुदेशक आई.टी.आई.
पाण्डु नगर, कानपुर

सम्पादक की कलम से .....

द्रविड़ भारत को 10 साल शुरू होने की खुशी में सभी सहयोगियों एवं पाठक गणों को बहुत–बहुत साधुवाद। आप सभी का साथ एवं सहयोग ऐसा ही मिलता रहे ताकि, बाबा साहब के विचारों को आगे बढ़ा सके जय भीम नमो बुद्धाये।

सूचनार्थ

अखिल भारतीय

कोरी/कोली समाज (रजि.) नई दिल्ली

शारवा कानपुर, उ0प्र0

कोरी कोली शौर्य सम्मान समारोह

स्थानः लाजपत भवन, मोतीझील, कानपुर
दिनांक 18 मार्च 2018, दिन रविवार, प्रातः 10 बजे से

विराट पर्व और उद्योग पर्व की विश्लेषणात्मक टिप्पणियां

विराट पर्व

1. कौरवों ने पांडवों के अस्तित्व का पता लगाने के लिए गुप्तचर भेजे, परंतु वे गुप्तचर दुर्योधन के पास लौट आते हैं और बताते हैं कि वे पांडवों का पता लगाने में असमर्थ हैं। ये दुर्योधन की आज्ञा के अभिलाषी हैं कि अब क्या किया जाए? – (विराट पर्व, अध्याय–25)

2. दुर्योधन अपने सलाहकारों से परामर्श करता है। कर्ण ने कहा कि अन्य गुप्तचर भेजे जाएं। दुःशासन ने कहा कि पांडव समुद्र पार चले गए होंगे। परंतु उनकी खोज की जाए।–(वही, अध्याय–26)

3. द्रोण ने कहा कि पांडवों को हराना अथवा उन्हें नष्ट करना संभव नहीं है। वे तपस्वी के वेष में होंगे, अतः सिद्धों और ब्राह्मणों को गुप्तचर के रूप में भेजा जाए। (वही, अध्याय–27)

4. भीष्म द्रोण का समर्थन करते है।–(वही, अध्याय–28)

5. कृपाचार्य ने भीष्म का समर्थन किया और कहा–पांडव हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं। परंतु बुद्धिमान लोग छोटे शत्रुओं की भी अवहेलना नहीं करते हैं। जब वे अज्ञातवास में हैं तो आप अभी से जाकर सेनाओं को एकत्र करें।–(वही, अध्याय–29)

6. इसके बाद त्रिगढ़ के सम्राट सुशर्मा ने एक अलग विषय प्रस्तुत किया। उसने बताया कि कीचक के बारे में 'मैंने' सुना है कि उसका निधन हो गया है, जो सम्राट विराट का सेनापति था। सम्राट विराट हमें अत्यधिक कष्ट देने वाला है। कीचक के निधक के बाद विराट को बहुत अधिक दुर्बल होना चाहिए। विराट के साम्राज्य पर क्यों न आक्रमण किया जाए? यह सबसे उपयुक्त समय है। कर्ण ने भी सुशर्मा का समर्थन किया। पांडवों के बारे में चिंता क्यों की जाए? ये पांडव धन और सेना से वंचित हैं तथा परास्त हैं। उनके बारे में परेशान क्यों हुआ जाए? वे अब तक मौत की मौत की गोद में चले गए होंगे। इस खोज–अभियान का त्याग कर दिया जाए और सुशर्मा की योजना को अमल में लाया जाए।–(वही, अध्याय–30)

7. सुशर्मा विराट पर आक्रमण करता है। सुशर्मा विराट की गायों को ले आता है। गायों के चरवाहे विराट को यह सूचना देते हैं और सम्राट से आग्रह करते हैं कि सुशर्मा का पीछा किया जाए तथा गायों की रक्षा की जाए।–(वही, अध्याय–31)

8. विराट युद्ध के लिए तैयार हो गया। इस बीच विराट के छोटे भाई शतनीक ने सुझाव दिया कि अकेले जाने के बजाय वह अपने साथ कनक (सहदेव), बल्लभ (युधिष्ठिर), शांतिपाल (भीम) और ग्रांथिक (नकुल) को अपने साथ ले लें, ताकि वे सुशर्मा से युद्ध करने में उनकी सहायता करें। विराट ने इस सुझाव पर अपनी सहमति प्रकट की और वे सभी गए। (वही, अध्याय–31)

9. सुशर्मा और विराट के बीच युद्ध।–(वही, अध्याय–32)

10. युधिष्ठिर विराट की रक्षा करता है।–(वही, अध्याय–33)

11. विराट नगरी में घोषणा होती है कि उनके सम्राट सुरक्षित हैं।–(वही, अध्याय–34)

विराट नगरी में कौरवों का प्रवेश

12. जब सम्राट विराट सुशर्मा का पीछा कर रहे थे, तभी दुर्योधन, भीष्म, द्रोण, कर्ण, कृप, अश्वत्थामा, शकुनि, दुःशासन, विविनशति, विकर्ण, चित्रसेन, दुर्मख, दुशल, और अन्य योद्धाओं के साथ विराट नगरी में घुस गए तथा विराट की गायों को पकड़ कर ले जाने लगे। चरवाहे सम्राट विराट के महल में आए और उन्हें यह समाचार दिया। उन्हें सम्राट को खोजने की आवश्यकता नहीं हुई, उन्हें सम्राट का पुत्र उत्तर मिल गया। इसलिए उन्होंने उसे ही यह समाचार दिया।–(वही, अध्याय–35)

13. उत्तर ने गर्व से कहा कि वह अर्जुन से श्रेष्ठ है और वह उनकी रक्षा कर लेगा। परंतु उसकी यह शिकायत थी कि उसका कोई सारथी नहीं है। द्रोपदी ने उसे बताया कि किसी समय ब्रह्मानंद अर्जुन का सारथी था। उससे क्यों न कहा जाए? उसने कहा कि उसके पास साहस नहीं है, अतः उसने द्रौपदी से निवेदन किया कि वह स्वयं जाकर उस सारथी से कहें। आप अपनी छोटी बहन मनोरमा से क्यों नहीं कहते। इसलिए उसने मनोरमा से कहा कि वह ब्रह्मानंद को ले आए।–(वही, अध्याय–36)

14. मनोरमा ब्रह्मानंद को अपने भाइयों के पास ले जाती है और उत्तर उसे अपना सारथी बनने के लिए प्रेरित करता है। ब्रह्मानंद ने स्वीकृति दे दी और कौरवों के समक्ष उत्तर का रथ संभाल लिया।–(वही, अध्याय–37)

15. कौरवों की सेना देखकर उत्तर ने रथ छोड़ दिया और भागना प्रारंभ कर दिया। अर्जुन से उसे रोक लिया। कौरवों ने यह देखकर संदेह करना प्रारंभ किया कि यह व्यक्ति अर्जुन होगा। अर्जुन ने उससे कहा कि इसमें भयभीत होने की कोई बात नहीं है।–(वही, अध्याय–38)

16. अर्जुन अपना रथ शामी वृक्ष तक ले गया। इसे देखकर द्रोण ने कहा कि इस व्यक्ति को अर्जुन ही होना चाहिए। यह सुनकर कौरव अधिक बेचैन हो गए। परंतु दुर्योधन ने कहा कि यदि द्रोण सही है, तो यह समाचार हमारे लिए सुखद है क्योंकि तेरहवें वर्ष से पूर्व ही पांडवों का पता लग गया है और उन्हें 12 वर्ष के लिए फिर बनवास का दंड भोगना पड़ेगा।–(वही, अध्याय–39)

17. अर्जुन, उत्तर से शामी वृक्ष पर चढ़ने के लिए कहता है तथा शस्त्र नीचे डालने को कहता है।–(वही, अध्याय–40)

18. उत्तर द्वारा शामी वृक्ष पर शव होने का संदेह करना।–(वही, अध्याय–41)

19. शस्त्रों को देखकर उत्तर का **हतप्रभ** होना। –(वही, अध्याय–42)

20. अर्जुन द्वारा शस्त्रों का वर्णन।
– (वही, अध्याय –43)

21. पांडवों के आवास के बारे में उत्तर की पूछताछ।–(वही, अध्याय–44)

22. वृक्ष से उतरते हुए उत्तर।–(वही, अध्याय–45)

23. हनुमान के चिह्न के साथ रथ। द्रोण इस बात से आश्वस्त हो जाते हैं कि वह अर्जुन ही हैं। कौरवों की सेना को अपशकुन दिखाई देते हैं।–(वही, अध्याय–46)

24. दुर्योधन सैनिकों को प्रोत्साहित करता है, जो द्रोण के यह कहने पर भयभीत हो गए थे कि वह अर्जुन हैं। द्रोण के प्रति कर्ण की भर्त्सना और दुर्योधन को यह सुझाव कि द्रोण को मुख्य सेनापति के पद से हटा दिया जाए।–(वही, अध्याय–47)

25. कर्ण से गर्व से यह घोषित किया और प्रतिज्ञा की कि वह अर्जुन को परास्त कर देगा।–(वही, अध्याय–48)

26. कृपाचार्य ने कर्ण को आत्मश्लाघी बनने और गर्व दिखाने पर चेतावनी दी। शास्त्रों द्वारा युद्ध को बुरा माना गया है।–(वही, अध्याय–49)

27. अश्वत्थामा कर्ण और दुर्योधन की भर्त्सना करता है, क्योंकि उन्होंने द्रोण की झूठी निंदा की है।–(वही, अध्याय–50)

28. अश्वत्थामा ने कर्ण और दुर्योधन को अपशब्द कहे, क्योंकि उन्होंने द्रोण की निंदा की। कर्ण ने उत्तर दिया, 'अंततोगत्वा मैं केवल सूत हूं।' परंतु अर्जुन ने उसी प्रकार दुर्व्यवहार किया है, जिस प्रकार राम ने बाली के साथ किया था।–(वही, अध्याय–50)

29. भीष्म, द्रोण और कृप द्वारा अश्वत्थामा को चुप कर दिया गया तथा दुर्योधन और कर्ण ने द्रोण से क्षमा याचना की।–(वही, अध्याय–51)

30. भीष्म का निर्णय कि पांडवों ने अपने बनवास के 13 वर्ष पूरे कर लिए हैं।–(वही, अध्याय–52)

31. अर्जुन ने कौरवों की सेना को परास्त कर दिया।–(वही, अध्याय–53)

32. अर्जुन कर्ण के भ्राता को पराजित करता है। अर्जुन, कर्ण को हराता है और कर्ण भाग जाता है।–(वही, अध्याय–54)

33. अर्जुन कौरवों की सेना का विनाश कर देता है तथा कृपाचार्य के रथ का विध्वंस का देता है।–(वही, अध्याय–55)

34. देवता लोग आकाश में आ गए और उन्होंने अर्जुन तथा कौरवों की सेना के बीच घमासान युद्ध देखा।–(वही अध्याय–56)

35. कृप और अर्जुन के मध्य युद्ध के मैदान से भाग जाना।–(वही, अध्याय–57)

36. द्रोण और अर्जुन के मध्य युद्ध और द्रोण का युद्ध के मैदान से भाग जाना।–(वही अध्याय–58)

37. अश्वत्थामा और अर्जुन के मध्य युद्ध।–(वही, अध्याय–59)

38. कर्ण और अर्जुन के मध्य युद्ध।–(वही, अध्याय–60)

39. अर्जुन द्वारा भीष्म पर आक्रमण।–(वही, अध्याय–61)

40. अर्जुन कौरवों के सैनिकों को मौत के घाट उतारता है।–(वही, अध्याय–62)

41. भीष्म की पराजय और उसका युद्ध के मैदान से पलायन।–(वही, अध्याय–64)

42. कौरवों के सैनिकों का मूर्छित हो जाना। भीष्म का यह कहना कि वे अपने गृह को लौट जाएं।–(वही, अध्याय–66)

43. कौरव सैनिक अभय से अर्जुन के समक्ष आत्म समर्पण करते हुए। उत्तर और अर्जुन विराट नगरी लौट आते हैं।–(वही, अध्याय–67)

44. विराट अपनी राजधानी में प्रवेश करता है तथा प्रजा उसका सम्मान करती है।–(वही, अध्याय–68)

45. पांडव सम्राट की सभा में प्रवेश करते हैं। (वही, अध्याय–69)

46. अर्जुन अपने भाइयों का परिचय विराट से करवाता है।–(वही, अध्याय–71)

47. अर्जुन के पुत्र और विराट की पुत्री का विवाह–(वही, अध्याय–72)

48. उसके बाद पांडव विराट नगरी को छोड़ देते हैं और वे उपप्लव नगरी में रहने लगते हैं।–(वही, अध्याय–72)

49. इसके बाद अर्जुन अपने पुत्र अभिमन्यु, वासुदेव और यादव को अनृत देश से लाता है।–(वही, अध्याय–72)

50. युधिष्ठर के मित्र सम्राट काशिराज और शल्य दो अक्षौहिणी सेनाओं के साथ आते हैं। इसी प्रकार यज्ञसेन द्रुपदराज एक अक्षौहिणी सेना के साथ आता है। द्रौपदी के सभी पुत्र आजिक्य, शिखंडी, धृष्टद्युम्न भी आ गए।–(वही, अध्याय–72)

उद्योग पर्व

1. अभिमन्यु के विवाह के बाद यादव तथा पांडव सम्राट विराट की सभा में एकत्र हुए। कृष्ण उन्हें संबोधित करते हैं कि भविष्य में क्या करना है। हमें वही करना चाहिए जो कौरवों और पांडवों, दोनों के ही हित में हो। धर्म कुछ भी स्वीकार कर सकता है। यहां तक कि एक गांव भी धर्म स्वीकार नहीं करेगा। अभी तक पांडवों ने

नीति का पालन किया है। परंतु यदि कौरव अनीति का पालन करते हैं, तो पांडवों को कौरवों का नाश करने में कोई हिचक नहीं होगी। किसी को भी इस तथ्य से भयभीत नहीं होना चाहिए कि पांडव अल्पसंख्यक हैं। उनके मित्र हैं जो उनकी सहायता करने आ जाएंगे। हमें कौरवों की इच्छा का पता करना चाहिए। मेरा सुझाव है कि हमें दुर्योधन के पास एक संदेशवाहक भेजना चाहिए और उससे यह कहा जाए कि वह अपने साम्राज्य का एक भाग पांडवों को दे दे।–(उद्योग पर्व, अध्याय–1)

2. बलराम कृष्ण के सुझाव का समर्थन करता है, परंतु आगे कहता है कि यह धर्म की मूल थी, जब कि वह जानता था कि वह शकुनि के हाथों से पराजित हो रहा है। इसलिए कौरवों के साथ युद्ध न करके यह ठीक होगा कि संधि–वार्ता से जो कुछ भी मिले, उसे प्राप्त करना चाहिए।–(वही, अध्याय–2)

3. सात्यकी उठ खड़े हुए और उन्होंने बलराम की प्रवृत्ति की भर्त्सना की।–(वही, अध्याय–3)

4. द्रुपद ने सात्यकी का समर्थन किया। द्रुपद इस बात पर सहमत हो गए कि वह अपने पुरोहित को संदेशवाहक के रूप में भेजेंगे।–(वही, अध्याय–4)

5. कृष्ण ने द्रुपद का समर्थन किया और वह द्वारका चले जाते है। द्रुपद और विराट द्वारा आमंत्रित सभी सम्राट आ पहुंचते हैं। इसी प्रकार दुर्योधन द्वारा जिन सम्राटों को आमंत्रित किया गया, वे भी पहुंच गए।–(वही, अध्याय–5)

6. द्रुपद अपने पुरोहित को निर्देश देता है कि उसे सभा में किस प्रकार बोलना है तथा इस मामले को सुलझाना है।–(वही, अध्याय–6)

7. अर्जुन और दुर्योधन, दोनों ही द्वारका जाते हैं तथा युद्ध के लिए उनसे सहायता की याचना करते हैं। उसने कहा कि वह उन दोनों की सहायता करेगा। मैं एक को अपनी सेना दे सकता हूं और दूसरे के साथ अकेला रह सकता हूं। आप यह चुनें कि आपको क्या चाहिए। दुर्योधन ने सेना को चुना। अर्जुन ने कृष्ण को चुना।–(वही, अध्याय–7)

8. शल्य का बृहद सेना के साथ पांडवों के पास आना। दुर्योधन उसे निम्न वर्ग का मानता है। शल्य और पांडवों की बैठक। पांडव शल्य से निवेदन करते हैं कि युद्ध में कर्ण को इतोत्साह किया जाए। शल्य के साथ समझौता।–(वही, अध्याय–8)

9. अध्याय–9– असंगत।

10. अध्याय–10–असंगत।

11. अध्याय–11–असंगत।

12. अध्याय–12–असंगत।

13. अध्याय–13–असंगत।

14. अध्याय–14–असंगत।

15. अध्याय–15–असंगत।

16. अध्याय–16–असंगत।

17. अध्याय–17–असंगत।

18. अध्याय–18–असंगत।

19. सात्यकी अपनी सेना सहित पांडवों के पास आता है और भागदत्ता दुर्योधन के पास जाता है।–(वही, अध्याय–19)

20. द्रुपद का पुरोहित कौरवों की सभा में प्रवेश करता है। पुरोहित ने कहा कि पांडव कौरवों के कुकृत्यों को भूल जाने के लिए तैयार हैं और उनके साथ संधि करना चाहते हैं। उसने बताया कि पांडवों के पास भारी सेना है फिर भी वे संधि करना चाहते हैं।–(वही, अध्याय–20)

21. भीष्म पुरोहित का समर्थन करता है। कर्ण आपत्ति करता है। भीष्म और कर्ण के बीच वाद–विवाद। धृतराष्ट सुझाव देता है कि संजय को उनकी ओर से समझौता करने के लिए भेजा जाए।–(वही, अध्याय–21)

22. धृतराष्ट्र संजय को पांडवों के पास भेजता है और उससे कहता है कि इस अवसर पर जो भी उचित समझो, वही कहो जिससे दोनों के बीच शत्रुता न बढ़े।–(वही, अध्याय–22)

23. संजय का पाडवों के पास जाना।–(वही, अध्याय–23)

24. संजय और युधिष्ठिर के बीच बातचीत।–(वही, अध्याय–24)

25. संजय युद्ध की निंदा करता है।–(वही, अध्याय–25)

26. धर्म का कहना है, 'मैं समझौता करने के लिए तैयार हूं, यदि कौरव हमारे इंद्रप्रस्थ साम्राज्य को हमें वापस कर दें।–(वही, अध्याय–26)

27. गुरुजन का वध करना और साम्राज्य को प्राप्त करना अधर्म है। यदि कौरव बिना युद्ध के किसी साम्राज्य को वापस करने से इंकार करते हैं तो यह अच्छा रहेगा कि आप वृष्णि और अंधक के साम्राज्य में भिक्षा मांगकर जीवनयापन करें।–(वही, अध्याय–27)

28. इस अध्याय में कहा गया है कि क्या संजय उन्हें धर्म के विरूद्ध कार्य करने अथवा धर्म के विरूद्ध किए गए कार्य का दोषी मानता है। संजय कहता है कि 'मैं स्वधर्म अथवा क्षमा को चाहता हूं।'–(वही, अध्याय–28)

29. कृष्ण संजय से कहते हैं कि युद्ध क्यों वैध है और संजय को बताते हैं कि वह धृतराष्ट्र को उनके विचारों से अवगत करा दें।–(वही, अध्याय–29)

30. संजय कौरवों के पास आता है और दुर्योधन को या तो इंद्रप्रस्थ पांडवों को वापस कर देना चाहिए अथवा युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए।–(वही, अध्याय–30)

31. संजय दुर्योधन से कहता है कि वह स्वयं जीवित रहे और उन्हें जीवित रहने दे। यदि वह इंद्रप्रस्थ वापस नहीं कर सकता तो उन्हें कम से कम पांच गांव दे देने चाहिए।–(वही, अध्याय–31)

32. संजय रात्रि में धृतराष्ट्र के पास पहुंचता है और उससे कहता है कि मैं प्रातः धर्म के संदेश को बताऊंगा।–(वही, अध्याय–32)

33. धृतराष्ट्र बेचैन होता है और उस संदेश के बारे में जानना चाहता है जो संजय लाया है। इसलिए वह संजय को शीघ्र बुलाता है। संजय उनका संदेश देता है और कहता है कि साम्राज्य का उनका भाग उन्हें देकर समझौता कर लिया जाए।–(वही, अध्याय–33)

34. धृतराष्ट्र विदुर को आमंत्रित करता है और उसका परामर्श मांगता है। उसका परामर्श यह है कि पांडवों को उनके साम्राज्य का भाग दे दिया जाए।–(वही, अध्याय–34)

35. अध्याय–35–असंगत।

36. असंगत। विदुर का कहना है कि दोनों पक्षों को मित्र होना चाहिए।–(वही, अध्याय–36)

37. अध्याय–37–असंगत।

38. अध्याय–38–असंगत।

39. धृतराष्ट्र विदुर से कहता है कि मैं दुर्योधन को छोड़ नहीं सकता, यद्यपि वह बुरा है।–(वही, आध्याय–39)

40. विदुर चातुर्वर्ण्य का वर्णन करता है।–(वही, अध्याय–40)

41. धृतराष्ट्र विदुर से ब्रह्मा के बारे में पूछता है। वह कहता है कि मैं नहीं बता सकता, क्योंकि मैं शूद्र हूं। इसके बाद सनत सुजाता आता है।–(वही, अध्याय–42)

42. ब्रह्म विद्या के बारे में धृतराष्ट्र और सनत सुजाता में परस्पर वार्तालाप होता है।–(वही, अध्याय–42)

43. सनत सुजाता और धृतराष्ट्र के बीच एक ही विषय पर विचार–विमर्श किया जाता है।–(वही, अध्याय–43)

44. ब्रह्म विद्या पर सनत सुजाता के विचार।–(वही, अध्याय–44)

45. सनत सुजाता योग का उपदेश देता है।–(वही, अध्याय–45)

46. सनत सुजाता आत्मा के बारे में बताता है।–(वही, अध्याय–46)

47. कौरव संजय द्वारा लाए गए संदेश को सुनने के लिए सभा में आते हैं।–वही अध्याय–47)

48. संजय संदेश सुनाता है। (संदेश का, विशेषकर अंश, जो अर्जुन ने कहा था)।–(वही, अध्याय–48)

49. भीष्म द्वारा कृष्ण और अर्जुन की प्रशंसा। कर्ण क्रोधित हो उठता है। द्रोण भीष्म का समर्थन करता है और समझौता करने का परामर्श देता है।–(वही, अध्याय–49)

50. धृतराष्ट्र संजय से मालूम करता है कि पांडवों और उनके कौन–कौन मित्र हैं तथा उनकी कितनी शक्ति है? संजय उलाहना देता है तथा उत्तर देता है।–(वही, अध्याय–50)

51. धृतराष्ट्र भीष्म के पराक्रम का विचार करता है और चिंतित होता है।–(वही, अध्याय–51)

52. धृतराष्ट्र अर्जुन के पराक्रम का विचार करता है और चिंतित होता है।–वही, अध्याय–52)

53. धृतराष्ट्र धर्म और उसके मित्रों के पराक्रम का विचार करता है। वह अपने पुत्रों से कहता है कि वे पांडवों के साथ संधि कर लें।–(वही, अध्याय–53)

54. संजय कौरवों की पराजय की भविष्यवाणी करता है।–(वही, अध्याय–54)

55. दुर्योधन कहता है कि पांडव हमें पराजित नहीं कर सकते, क्योंकि हमारा सैन्य–बल अधिक है।–(वही, अध्याय–55)

56. संजय पांडवों द्वारा सेना की सुव्यवस्था का वर्णन करता है।–(वही, अध्याय–56)

57. संजय यह बताता है कि पांडवों ने कौरवों के योद्धाओं को मौत के घाट उतारने की किस प्रकार की योजना तैयार की है। दुर्योधन कहता है कि वह पांडवों से भयभीत नहीं है कि वे कौरवों को पराजित कर देंगे। कौरवों के पास अधिक सेना है।–(वही, अध्याय–57)

58. धृतराष्ट्र दुर्योधन से कहता है कि वह युद्ध न करे। दुर्योधन शपथ लेता है कि वह युद्ध से विमुख न होगा। धृतराष्ट्र रो पड़ता है।–(वही, अध्याय–58)

59. धृतराष्ट्र संजय से कहता है कि वह उसे बताए कि कृष्ण और अर्जुन के बीच क्या वार्तालाप हुआ?–(वही, अध्याय–59)

60. धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को बताया कि देवता पांडवों की सहायता करेंगे और कौरवों का विनाश कर देंगे।–(वही, अध्याय–60)

61. दुर्योधन कहता है कि वह इससे भयभीत नहीं है।–(वही, अध्याय–61)

62. कर्ण कहता है कि वह स्वयं अर्जुन का वध करने में सक्षम है।–(वही, अध्याय–62)

63. दुर्योध कहता है कि वह कर्ण पर निर्भर होकर युद्ध कर रहा है और उसे भीष्म, द्रोण आदि पर उतना विश्वास नहीं है।–(वही, अध्याय–63)

64. विदुर दुर्योधन से कहता है कि शत्रुता त्याग दे। (वही, अध्याय–64)

65. धृतराष्ट्र दुर्योधन की भर्त्सना करता।–(वही, अध्याय–65)

66. संजय अर्जुन का संदेश धृतराष्ट्र को बताता है।–(वही, अध्याय–66)

67. जो सम्राट कौरवों के सभागार में एकत्र हुए थे, वे अपने–अपने गृहों को लौट गए। व्यास और गांधारी विदुर के साथ आते हैं। व्यास ने संजय से कहा कि वह धृतराष्ट्र को वह सभी बताए, जो उसे कृष्ण के वास्तविक स्वरूप और अर्जुन के बारे में ज्ञात है।–(वही, अध्याय–67)

68. संजय धृतराष्ट्र को कृष्ण के बारे में बताते हैं।–(वही, अध्याय–68)

69. धृतराष्ट्र दुर्योधन से कहता है कि वह कृष्ण के आगे आत्म–समर्पण कर दे। दुर्योधन इंकार करता है। गांधारी दुर्योधन से अपशब्द कहती है।–(वही, अध्याय–69)

70. कृष्ण के अलग–अलग नाम और उनका मूल।–(वही, अध्याय–70)

71. धृतराष्ट्र कृष्ण को समर्पित हो जाता है।–(वही, अध्याय–71)

72. युधिष्ठिर और कृष्ण में संवाद। युधिष्ठिर बताता है कि संजय ने उससे कहा है कि धृतराष्ट्र पर विश्वास न किया जाए। युधिष्ठिर संपत्ति के महत्व पर बल देता है। क्षात्रधर्म के बारे में बताता है तथा उसके पालन की आवश्यकता पर बल देता है। कृष्ण स्वयं कौरवों के पास जाने का सुझाव देता है। युधिष्ठिर को वह विचार अच्छा नहीं लगता, परंतु वह यह कहता है कि कृष्ण जो कहते हैं, वही सर्वोत्तम है।–(वही, अध्याय–72)

73. कृष्ण धर्म को वह रहस्य बताते हैं, जो उनके मन में है। कृष्ण धर्म से कहते हैं कि कौरवों के साथ मधुर वचन कहने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे अन्य कई कारण हैं कि आपको कौरवों के साथ समझौता क्यों नहीं करना चाहिए। इस बात पर बल देना है कि कौरवों ने द्रौपदी को कितना अपमानित किया? इसलिए हे धर्म! उनको मारने में न हिचकिचाओ।–(वही, अध्याय–73)

74. भीष्म कृष्ण से कहता है कि कौरवों के साथ सौहार्द्र से बातचीत की जाए।–(वही, अध्याय–74)

75. कृष्ण भीम का उपहास करते हैं।–(वही, अध्याय–75)

76. भीम युद्ध करने के लिए अपना मन पक्का कर लेते हैं।–(वही, अध्याय–76)

77. कृष्ण भीम को दैव और पौरुष का अंतर समझाते हैं।–(वही, अध्याय–77)

78. अर्जुन कृष्ण से कहता है कि 'क्षमा', अर्थात युद्ध न करने पर विचार किया जाए।–(वही, अध्याय–78)

79. कृष्ण का अर्जुन से संवाद। मैं शांति के समझौते के लिए प्रयत्न करूंगा। यदि वह समझौता संभव नहीं हो तो युद्ध करने के लिए तैयार रहना। मैं दुर्योधन को धर्म की सहमति के बारे में नहीं बताऊंगा कि वह पाँच गांव स्वीकार करने के लिए सहमत हैं।–(वही, अध्याय–79)

80. नकुल कृष्ण से कहता है, जो सर्वश्रेष्ठ हो, वही किया जाए।–(वही, अध्याय–80)

81. सहदेव कृष्ण से मिलता है तथा कहता है कि कौरवों के साथ युद्ध किया जाए। सत्यकी ने कहा कि यहां जितने भी योद्धा एकत्र हुए हैं, वे सभी सहदेव के विचार से सहमत हैं।–(वही, अध्याय–81)

82. द्रौपदी कृष्ण से भेंद करती है और उन्हें बताती है कि वह तब तक संतुष्ट नहीं होगी, जब तक दुर्योधन का विनाश नहीं हो जाता। कृष्ण उसे आश्वासन देते हैं।–(वही, अध्याय–82)

83. अर्जुन और कृष्ण के बीच अंतिम बैठक होती है। अर्जुन क्षमा, अर्थात शांकि के लिए भरसक प्रयत्न करता है। युधिष्ठिर कृष्ण से कहते हैं कि कुंती को आश्वासन दिया जाए। कृष्ण अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए जाते हैं।–(वही, अध्याय–83)

84. कृष्ण जब हस्तिनापुर जाते हैं, तो मार्ग में उन्हें अच्छे और बुरे शकुन होते दिखाई पड़ते हैं।–(वही, अध्याय–84)

85. दुर्योधन कृष्ण के लिए हस्तिनापुर की यात्रा में स्थान–स्थान पर विश्रामालय बनवाते हैं।–(वही, अध्याय–85)

86. धृतराष्ट्र विदुर से पूछते हैं कि कृष्ण को कौन–कौन से उपहार दिए जाएं।–(वही, अध्याय–86)

87. विदुर धृतराष्ट्र से कहते हैं कि वह कृष्ण को पांडवों से अलग नहीं मानते।–(वही, अध्याय–87)

88. दुर्योधन का कहना है कि कृष्ण पूज्य हैं। परन्तु यह समय नहीं है कि उनकी पूजा की जाए। भीष्म दुर्योधन से कहते हैं कि पांडवों के साथ समझौता कर लिया जाए। दुर्योधन की इच्छा कृष्ण से साक्षात्कार करने की है। भीष्म दुर्योधन का घोर विरोध करता है।–(वही, अध्याय–88)

89. कृष्ण हस्तिनापुर में प्रवेश करते हैं। धृतराष्ट्र से भेंट। वे विदुर के यहां ठहरते हैं।–(वही, अध्याय–89)

90. कुंती और कृष्ण की भेंट। कुंती अपने दुख से आहत है, कृष्ण उसको सांत्वना देते हैं। कुंती कृष्ण से कहती हैं: (1) मेरे पुत्रों से कहो कि वे अपने साम्राज्य के लिए युद्ध करें। (2) मैं द्रौपदी के लिए दुखी हूं।–(वही, अध्याय–90)

91. कौरव कृष्ण को भोजन करने के लिए बुलाते हैं। कृष्ण इंकार कर देते हैं। कृष्ण विदुर के साथ भोजन करते हैं।

92. विदुर कृष्ण से कहता है कि वह नहीं चाहता कि कृष्ण कौरवों के बीच जाएं।–(वही, अध्याय–92)

93. कृष्ण विदुर को बताते हैं कि कौरव उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं। मैं केवल यहां इसलिए आया हूं क्योंकि क्षमा, अर्थात शांति पुण्यकार्य है।–(वही, अध्याय–93)

94. कृष्ण कौरवों के सभागार में प्रवेश करते हैं।–(वही, अध्याय–94)

95. कृष्ण सभा को संबोधित करते हैं। उन्होंने कौरवों से कहा कि पांडव शांति और युद्ध दोनों के लिए ही तैयार हैं। उन्हें उनका आधा साम्राज्य दे दिया जाए।–(वही, अध्याय–95)

96. जामदग्नि दंभ के विरोध में एक कहानी कहता है।–(वही, अध्याय–96)

97. मातलि आख्यान। (वही, अध्याय–97–105)

98. नारद का दुर्योधन को परामर्श।–(वही, अध्याय–106)

99. गाल्व आख्यान।–(वही, अध्याय–106–123)

100. धृतराष्ट्र कृष्ण से कहता है कि वह दुर्योधन को परामर्श दे।–(वही, अध्याय–124)

101. भीष्म का दुर्योधन को परामर्श। द्रोण का समर्थन। विदुर दुर्योधन की भर्त्सना करते हैं। धृतराष्ट्र का परामर्श।–(वही, अध्याय–125)

102. भीष्म और द्रोण दूसरी बार दुर्योधन को समझाते हैं।–(वही, अध्याय–126)

103. दुर्योधन यह घोषणा करता है कि पांडवों को कुछ भी नहीं दिया जाएगा।–(वही, अध्याय–127)

104. कृष्ण दुर्योधन की भर्त्सना करते हैं। दुर्योधन सभा त्याग देता है। दुःशासन का भाषण। कृष्ण भीष्म को चेतावनी देते हैं।–(वही, अध्याय–128)

104. धृतराष्ट्र विदुर से कहते हैं कि गांधारी को सभागार में लाया जाए। दुर्योधन वापस आता है। गांधारी उससे कहती है कि साम्राज्य का आधा भाग पांडवों को दिया जाए।–(वही, अध्याय–129)

104. दुर्योधन सभा का त्याग करता है। उसका इरादा है कि कृष्ण का वध कर दिया जाए। सात्यकि धृतराष्ट्र को इस गुप्त कुचक्र की सूचना देता है। कृष्ण का भाषण। धृतराष्ट्र दुर्योधन को सभा में फिर बुलाता है, उसे चेतावनी देता है। विदुर द्वारा भर्त्सना।–(वही, अध्याय–130)

105. भगवान का विश्व रूप दर्शन, धृतराष्ट्र को दिव्य चक्षु प्राप्त होते हैं। कृष्ण सभा छोड़ देते हैं और कुंती के पास जाते हैं।–(वही, अध्याय–131)

106. कृष्ण कुंती से कहते हैं कि सभा में क्या–क्या हुआ। कुंती कृष्ण से कहती हैं कि क्षत्रियों के लिए युद्ध अनिवार्य हैं। इससे बढ़ कर और कोई धर्म नहीं है।–(वही, अध्याय–132)

107. कुंती अपने मत को पुष्ट करने के लिए कृष्ण से विदुला की कहानी कहती हैं।–(वही, अध्याय–133)

108. विदुला की कहानी।–(वही, अध्याय–134)

109. विदुला की कहानी।–(वही, अध्याय–135)

110. विदुला की कहानी।–(वही, अध्याय–136)

111. कुंती की अपने पुत्रों को सलाह। कृष्ण का कर्ण को परामर्श और कृष्ण का उपप्लव्य नगरी के लिए प्रस्थान।–(वही, अध्याय–137)

112. भीष्म और द्रोण द्वारा दुर्योधन को परामर्श।–(वही, अध्याय–138)

113. भीष्म का दुख। द्रोण फिर दुर्योधन को परामर्श देता है।–(वही, अध्याय–139)

114. धृतराष्ट्र और संजय के मध्य वार्तालाप। कर्ण को कृष्ण परामर्श देता है।–(वही, अध्याय–140)

115. कर्ण का कृष्ण को उत्तर।–(वही, अध्याय–141)

116. कृष्ण का कर्ण को आश्वासन, पांडवों की विजय होगी।–(वही, अध्याय–142)

117. कर्ण को अपशकुन होते हैं। पांडवों को समाप्त करने का उसका दृढ़ निश्चय। उसका गृह को प्रस्थान।–(वही, अध्याय–143)

118. विदुर और पृथु के मध्य वार्तालाप। उसे पता चलता है कि दुर्योधन युद्ध करने के लिए दृढ़ है। कुंती का दुख। कर्ण को उसके मूल के बारे में बताने की इच्छा। कुंती नदी के किनारे जाती हैं।–(वही, अध्याय–144)

119. कुंती कर्ण से भेंट करती हैं। वह कर्ण को उसके मूल के बारे में बताती हैं तथा उससे निवेदन करती है कि वह पांडवों के साथ हो जाए।–(वही, अध्याय–145)

120. सूर्य कुंती के प्रस्ताव का समर्थन करता है। कर्ण उसको अस्वीकार कर देता है अर्जुन को छोड़कर सभी पांडवों को बचाने का वचन देता है।–(वही, अध्याय–146)

121. कृष्ण पांडवों के पास जाते हैं। युधिष्ठिर पूछता है कि कौरव–सभा में क्या–क्या हुआ। (वही, अध्याय–147)

122. कृष्ण पूरी कहानी सुनाता है।–(वही, अध्याय–147, 148, 149, 150)

123. पांडवों की सेना के सेनापति की नियुक्ति। कुरूक्षेत्र में पांडवों की सेना का प्रवेश।–(वही, अध्याय–151)

124. सेना को रसद पहुंचाने के लिए पांडवों की व्यवस्था के विवरण।–(वही, अध्याय–152)

125. कौरवों की ओर प्रबंध। हमारी सेना को कल प्रातः ही कुरूक्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए।–(वही, अध्याय–153)

126. धर्म को यह भय है कि वह युद्ध करने के लिए गया तो वह अपने नैतिक औचित्य से गिर जाएगा। कृष्ण ने उसे संतुष्ट किया। अर्जुन ने कहा कि तुम्हें युद्ध करना चाहिए।–(वही, अध्याय–154)

127. दुर्योधन की सेना का विवरण।–(वही, अध्याय–155)

128. भीष्म को कौरव सेना का सेनापति बनाया गया।–(वही, अध्याय–156)

कर्ण इससे नाराज होते हैं। वह निर्णय करता है कि भीष्म की मृत्यु होने तक वह कौरव सेना की बागडोर नहीं सम्भालेगा।

129. कृष्ण पांडवों की सेना के सेनापति बन जाते हैं।–(वही, अध्याय–157)

130. बलराम तीर्थयात्रा पर यह कहकर चले जाते हैं कि मैं कौरवों को नष्ट होते नहीं देखना चाहता।

131. रूक्मिणी को न तो अर्जुन चाहता है और न दुर्योधन चाहता है अतः वह घर चली जाती हैं।–(वही, अध्याय–158)

132. संजय और धृतराष्ट्र के बीच वार्तालाप। वह धृतराष्ट्र को दोषी ठहराता है।–(वही, अध्याय–159)

133. पांडवों की सेना हिरण्यवती नदी के किनारे ठहरी हुई है। दुर्योधन पांडवों को आक्रमण के लिए ललकारता है और कृष्ण कहते हैं कि यदि तुम युद्ध कर सकते हो तो युद्ध करो।–(वही, अध्याय–160)

134. उल्का संदेश लेकर जाता है।–(वही, अध्याय–164)

135. क्रोधित पांडव गुस्से से भरे संदेश भेजते हैं। वे कल से युद्ध आरंभ करने का आदेश देते हैं।–(वही, अध्याय–162)

साभार – बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर
सम्पूर्ण वाङ्मय खण्ड–7
(पृ.सं. 278 से 291 तक)
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

ऋग्वेद में दास प्रथा

ऋग्वेद आर्यों का ग्रंथ है। यह ग्रंथ आर्यों के लिए पवित्रतम है। किंतु भारत वर्ष की करोड़ों जनता के लिए सिर्फ बकवास है और प्रत्येक सूक्त, प्रत्येक मंत्र गुलामी की बेड़ियां है। आर्य (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य) ईजियन सागर के तट के बोल्गा नदी के पहाड़ी और जंगली कबीले है। जो भारत से आकार ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य तीन वर्गों में बंट गए। ऋग्वेद 600 ई. पू. में विभिन्न साधुओं द्वारा श्रृंखलाबद्ध भानुमती का पीटारा है। इसमें यह उल्लिखित है कि भारत के मूल नस्ल निवासी शूद्रों का शोषण, उत्पीड़न उन पर अत्याचार कैसे किया गया। शूद्रों को दास, दस्यु, शूद्र और चांडाल कैसे बनाया गया। शूद्रों का भारत कैसे लूटा गया, कैसे उनकी सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान, खनिज संपदा, जल, जंगल और जमीन छीना गया हैं।

ऋग्वेद में पचास स्थलों पर लोहे का वर्णन है और भारत में लौहयुग 700 ई. पू. में आया। ऋग्वेद में लोहे का पिंजड़ा, लोहे का हंटर, लोहे का पैर, चाकू, सूई, तलवार आदि का वर्णन है जो 600 ई. पू. में ही प्रचलन में आया था। ऋग्वेद में सोने का वर्णन 100 बार आया है, यह विशेष प्रचलन में 200 ई. पू. के आस –पास था। ऋग्वेद में सोमरस (शराब) का प्रयोग 100 बार किया गया है, जो गाय के चमड़े पर सूखा (हलवा) जैसा शराब या भांग का हलवा आदि रखा जाता था।

ऋग्वेद में दास, असुर, दस्य वेद विरोधी हैं, क्योंकि यह आर्यों के द्वारा लिखित हिन्दू संविधान है। जिसका डंडा सिर्फ मूल भारतीयों पर बरसता है। जब शूद्रों को इस बात का एहसास हो गया कि आर्य और उनके काले ग्रंथ शूद्र वर्ग के खिलाफ हैं तो उन्होने आर्यवाद और वेदवाद के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया। वेद की होली जलाई गई और कण्व जैसे ऋषियों को बांध कर पीटा गया। इसका कारण यह भी था कि ब्राम्हण, क्षत्रीय काम नहीं करते थे। केवल आम जनता को मूर्ख बनाकर खाते और शराब पीते थे। गांजा, भांग, चरस, अफीम तथा गाय, बछड़े, सुअर और भैंसे का मांस और शराब ब्राम्हणों का प्रिय खाद्य और पेय पदार्थ था।

कण्व ऋषि को जब शद्रों ने बांध कर पीटा तो ब्राम्हणों ने इंद्र नामक क्षत्रीय (लठैत) से आग्रह किया कि शूद्र हमारे खाने, पीने, यज्ञ–हवन में बाधा डाल रहे हैं, सो इन्हें मारो। ब्राम्हण निकम्मे एव अकर्मण्य थे। अतः वेद काल में घोर गरीबी एवं दरिद्रता थी। (मंडल–4, सूक्त–50, मंत्र–9,10) उस पर भी ब्राम्हण जुआरी एवं शराबी थे तथा शराबी पिलाने वाले यजमान ढूंढते थे। (9–112–1) ब्राम्हण गाय के चमड़े पर सील रखकर शराब (सोम) बनाते थे। (10–94–9) तथा (8–4–13) ब्राम्हण दासों को खरीदने व बेचने का काम करते थे। शुनः शेप कथा सर्वविदित है। स्त्री पर विश्वास नहीं किया जाता था और कहा जाता था कि स्त्री झूठी व भेड़िये के ह्रदय वाली है, वह विश्वास के योग्य नहीं है (10–95–14,15)। वैदिक काल में भाई– बहन का भी संबंध पति–पत्नी जैसा था, किन्तु यम अपनी बहन यमी की यौन इच्छा पूरी नहीं करता है और कहता है कि एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब भाई–बहन आपस में यौन संबंध नहीं रखेंगें (10–10–8,9,10,11,12,13)। वैदिक काल में सूद पर लेन देन होता था (8–55–10)। इसमें इंद्र से कहा गया कि सूद खाने वाले को पराजित करो।

वेदकाल में कर्ज का लेन–देन भी होता था, कर्ज न चुका पाने वाले व्यक्ति को कड़ी से कड़ी सजा दी जाती थी। यहां तक कि कर्जदार की हत्या भी कर दी जाती थी। ब्राम्हण कर्जदार कभी अदा नहीं कर पाता था और माजिक की प्रताड़ना से तंग आकर इंद्र से निवेदन करता था कि हे इंद्र! हमें ऋण से मुक्त करो (10–127–7) वैदिक काल में चोरियां बहुत हुआ करती थीं। चोरी, गाय, भैंस, भेड़, बकरी एवं दूध तक की होती थी। 10–127–5,6 में एक ब्राम्हण कहता है कि हे इंद्र! चोर को हमसे दूर करो। दूध की जो चोरी करता है। उसे सजा दो–(10–87–16)। निर्धन ब्राम्हण कहता है कि जो चोरी का धन पाया था। वह हमें दो (9–111–2)। हे इंद्र! हमारे धन की रक्षा करो ताकि चोरी न हो (7–54–3)।

वेद काल में घोर दरिद्रता थी। धनहीन ब्राम्हण इंद्र से प्रार्थना करते हैं कि हे इंद्र! धनहीन ब्राम्हण को राजा धन देता है। अतः हमें धन दिलाओ (4–50–9,10) हे इंद्र! आप गरीब और निर्धन को धन की प्रेरणा देने वाले हैं (7–56–20)। हे इंद्र! हम ब्राम्हण गरीबी से तंग आ चुके हैं। मिट्टी के घर–छप्पर से तंग आ चुके हैं। अतः हमें धन दो – समृद्ध करो–(7–89–1–5)। हे इंद्र! तुम दयावान हो हमारी गरीबी, दरिद्रता और भूखमरी को दूर करो (8–55–14)। हमारी निर्धनता को दूर करो। हमें धन दो (7–52–3)। हे इंद्र! हमें समृद्धि दो। हे आर्य रक्षक इंद्र! हमारी रक्षा करो (1–130–8)। हे इंद्र! देव निदंक दस्युओं को खत्म करो, मार डालो–(1–152–2)। हे इंद्र! इन विभिन्न जाति वाले शत्रुओं से हमारी रक्षा करों। (10–69–12)। इंद्र! एक प्रकार का गुंडा था जिसे कोई भी शराब पिला कर गाय, बैल अथवा घोड़े का मांस खिलाकर किसी को मरवा सकता था। इंद्र ने मांस खा, शराब पी और चिघाड़ कर बोला तथा गायें दिला दीं। कहा जाता है कि वेद काल में देव गण ब्राम्हण आदि रथ पर विचरण करते थे। आसमान में विमान से चलते थे, सब झूठ है। वास्तव में वेदकाल सबसे प्रदूषित काल था, वेद काल इतिहास का सबसे निर्धनतम, अधम एवं जंगली असभ्य काल था। इंद्र बकरे की गाड़ी (रथ) पर चलते थे। कभी भेड़ और कभी बैलगाड़ी पर। वैदिक काल में छप्पर से तीन मंजिल मकान कल्पना की गई (10–66–3)। इंद्र बकरे के रथ पर बड़े खुश होकर चलते थे। (10–26–8)।

दस्यु, दास, राक्षस और असुर आर्य नहीं हैं (10–49–3)। इसलिए इंद्र तथा सारे आर्य (ब्राम्हण, क्षत्रीय, वैश्य) एवं 33333 देव शूद्रों के शत्रु हो गए। आर्य हमलावार थे जो शूद्रों को गुलाम बनकर रखने में सफल हो गए। कृष्ण नामक असुर (मूल भारतीय दास राजा) जिसके पास दस हजार सेना थी, इंद्र ने उसे छल से मारा था। (8–85–12,13)। वेद विरोधी एवं ब्राम्हणवाद विरोधी होने वाले के करण दस्यु–दासों की वैदिक निंदा व हत्या किया करते। ब्राम्हण इंद्र के पास जाते है और निवेदन करते है कि हे इंद्र! वेद ब्राम्हण विरोधी–दास–दस्युओं के हमारी रक्षा करो–(10–22–8)। वैदिकों से जब दास–दस्यु (शूद्र) तंग आ जाते तो वैदिक ऋषियों को पकड़कर दस्यु डोरी के पेड़ में बाध कर पीट दिया करते थे। कण्व ऋषि सबसे दुष्ट ऋषि था, इसलिए उसे शुद्रों (दस्युओं) ने कई बार बांध कर पीटा (8–5–23/8–5–25)। एक बार चार ऋषियों –कण्व, आवत, उपस्तुत तथा अत्रि को एक साथ बांधकर राक्षसों (शूद्रों) ने पीटा (10–5–25)।

निरूक्त 2/17 में कहस गया कि दास पत्नी, **दासाधिपल्यः दासः कर्म करस्तं हि ता अधिष्ठाय पान्ति स हि दासः कर्मणा श्रान्तः तासु पीतासु विश्रान्तः भवतिः** अर्थात दास शब्द के अर्थ में उपक्षीण होने वाली दस धातु हैं। तदनुसार दास वह है जो कर्म करते–करते उपक्षीण (थकित) हो जाता है। दास वह है जो वेद और ब्राम्हण के विरूद्ध है जो वैदिकों का कहना नहीं मानता है, जो वैदिकों से अपने अधिकार छीनता है और रोड़े बने शत्रुओं (वैदिकों) को मार डालता है (10–22–8–ऋग्वेद) के अनुसार –

अकर्मा दस्युरभि नो अमंतु अमंतुरन्यव्रतो अमानुषः त्वं तस्यामित्रहन् वधर्दासस्य दम्भय – (10–22–8) वेद के इस मंत्र के द्वारा दास (दस्यु) वह है जो आलसी और क्रूर है। जिनकी वेद–वैदिक और ब्राम्हणों में श्रद्धा नहीं है। जिनकी ईश्वर में श्रद्धा नहीं है, अथर्ववेद कहता है–

ये श्रद्धा धन काम्या क्रव्यादा समासते।
ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्याधति सर्वदा।।(अथर्व–12–2–51)

1. औपनिवेशिक दास – किसी राज्य, साम्राज्य अथवा सेनापति द्वारा किसी राज्या पर आक्रमण कर देश को जीत के पश्चात वहां के संभ्रांतो को साथ में मिलाकर शेष निरीह जनता को अपना गुलाम बना लेना और उनके साथ पशुवत व्यवहार करना।

2. कर्मकर भृत्य दास – घरेलू चाकर, कृषि श्रमिक, अथवा वे शिल्पकार जो परिश्रम और बेगार (पारिश्रमिक के बिना भी) संभ्रांत का काम करने को बाध्य हों, उन्हें कर्मकर भृत्य दास कहते है।

3. युद्धबंदी दास– युद्ध में जीत अथवा हार के बिना भी युद्ध में बंदी बनाए गए।

4. ज्ञातिदास – संभ्रांत द्वारा दहेज, वधु अथवा सगे–संबंधी अथवा किसी खास प्रयोजन हेतु अल्पकालिक अथवा पूर्णकालिक सेवा हेतु दिया गया गुलाम–बधूआ।

5. बंधली दास – राज्यभेंट, चोरी, डकैती, अपराधी अथवा अन्य राज्य के भगोड़े अपराधी जिन्हें बंधन बनाकर गुलाम बना लिया जाता है।

6. भेंटी दास – दान में दिए अथवा लिए किसी पर्व, उत्सव आदि में प्राप्त गुलाम।

7. क्रीत दास – खरीदे हुए गुलाम।

8. पैतृक दास– दास का बेटा दास बंधुआ का बेटा बंधुआ। ये दास सनातन जो आज भी इसी रूप में विद्यमान है।

9. शुभेच्छु दास– असक्त, अर्द्धविकलांग, मजबूर अथवा रोगी जो अपनी असहायता एवं मजबूरी के चलते स्वयं दासता स्वीकार कर लेते है।

10. भुजिस्म दास– स्वतंत्र दास जो जंगलों, पहाड़ों, कंदराओ में घूम–घूम कर पशुवत, आखेटक के रूप में रहते हैं। किंतु समय से उनसे काम लिया जा सकता है, वे ही जन जाति, जंगल जाति है।

कुछ दास नाम (प्राचीन भारत में दास प्रथमचानना) इस प्रकार है–बीजक (जा. VI–235), चन्न–(थेर –68), दासक (थेर–17), जालि–(जा. VI–456), कारू–(विनय–I–276), कलंदुक–(जा. I–458), कान्ह–(दी.नी. I–16), कटहक–(जा. I–451), मक्खली गोसाल–(दी.नी.147, दी.नी.अ. I–456143–4), नंद–(1–3–412), पुन्नक–(विनय–1–240), धम्म–अ–3–130 मि.प. –4–8–25), पुराण कस्सप–(दी.नी.–147 दी.नी. अ–(1–142) विदुर–(जा. 6–258), विडुडभ–(जा. 4–145)

दासियों की सूची–वीरणी–(जा. 5–117), दिसा–(दि.नी. 3/6), घनपाली–(जा. 1.402), काली (धम्म.अ. 1.170), कन्हाजिना, वेस्ससन्ता–(जा. 6. 546), खुजुत्तर–(धम्म अ.अ. 1.281), मूसिका–(जा. 3.

216), नागमुदा–(जा. 3.145), पिंगला–(जा. 3.101), पुन्ना–(जा. 1.68) 2.428 रोहिणी (जा. 1.24 पुन्निका–थेरीगाथा–अ.65), रज्जुमाला (विमा. अ. व–50), वासम खत्तिया–(जा. 3.145), उत्तमा–ति–मोदकी– (थेरीगाथा–अ.30 आदि)।

कौटिल्य, मनु और नारद की दासता संबंधी निर्धारण

	कौटिल्य	मनु	नारद
1.	ध्वजाहतः– ध्वज के साथ	ध्वजाहतः ध्वज के साथ	प्राप्तांयुद्धात–युद्ध से से प्राप्त
2.	उदर दासः पेट का दास	भक्तदासः भात का दास	भक्तदासः
3.	गृहजात–घर में उत्पन्न	गृहे जातः	गृहे जातः
4.	क्रीतः खरीदा हुआ	क्रीतः	क्रीतः
5.	लब्ध–पाया गया	दात्रिमः–दिया गया	लब्धः–प्राप्त
6.	दाय आगतः	पैतृकः–पिता से प्राप्त	दयात् उपागत्
7.	दंड प्रगीतः न्यायिक निर्णय से प्राप्त	दंड दासः– न्यास का दास	महतो ऋणात् मोक्षितः– बहुत बड़ों से मुक्त
8.	आहितकः गिरवी रखा हुआ	गिरवी रखा हुआ दास	स्वामिना आहितः स्वामी के द्वारा गिरवी रखा हुआ
9.	आत्मविक्रमी	अपने आप को बेचने वाल	आत्मनः विक्रेता
10	XX	XX	पणेजितः–शर्त में जीता हुआ
11.	XX	XX	इति उपागत–में तुम्हारा' ऐसा कह पास आने वाला दास
12.	XX	XX	प्रव्रज्या अवसितः संन्यास से लौटा हुआ
13.	XX	XX	अन्नाकाल भूतः– अकाल के समय पालित दास
14.	XX	XX	बड़वाहतः– दासी के साथ रहने के कारण बना हुआ दास
15.	XX	XX	कृतः–बनाया हुआ दास

कौटिल्य सहित मनु और नारद ने भी आजीवन दासता के साथ ही साथ सीमित अथवा अल्पावधि के लिए दासता स्वीकार की है। जैसे ऋणी आजीवन दास नहीं हो सकता। क्योंकि कत्ल का अपराधी भी एक सौ वर्ष की अवधि को 50 वर्ष में पूरा कर लेता है। फिर ऋणीदास इतना बड़ा ऋणी नहीं हो सकता कि वह आजीवन दास रहे। हां, भूदास और सामंती अत्याचार अपने उत्पीड़न और पुजारी धर्म, स्वर्ग और नर्क का भय दिखाकर आजीवन व पैतृक बंधुआ–दास बनाते रहे हैं। वेद में मनु, कौटिल्य और नारद की भांति नहीं बल्कि केवल आठ प्रकार के दास हैं, जिन्हें विश्व में सर्वाधिक क्षत–विक्षत किया गया–देखिए–

इंद्र से ब्राम्हणों द्वारा प्रार्थना की गई है कि इंद्र! आप राक्षसों (दासों) से हमारी रक्षा करने वाले हैं। जिस प्रकार से कृष्णानामक असुर (दास) को अंशुमती नदी के किनारे खाल उतार कर मारा और भस्म कर दिया। शंबर असुर को पर्वत से नीचे गिरा दिया था। हमारी रक्षा करें (ऋ 1–130–8)। हे मित्र और वरूण! तुम दोनों में से प्रत्येक विशेष रूप से कर्म करता है, सत्यभाषी, मनशील, मेधावियों द्वारा प्रशंनीय एवं शत्रुनाशक है। चार अस्त्र धारण करने वाले (दासो) का नाश करता है एवं प्रत्येक के सामर्थ्य से देवनिंदक (दास) लोग पहले ही समाप्त हो जाते है। (ऋ 1.152. 2)।

आर्यों के भारतीय दासों पर आक्रमण के समय तक भारतीय दास (शूद्र) सभ्याता विश्व में एक विकासमान स्थिति खड़ी हो चुकी थी। लौह निर्मित भवन एवं शस्त्रागार थे (ऋ. 2.19.8)। आर्यों ने तरह–तरह का अत्याचार किया था, तब के इंद्र और राम आन के ब्लेयर और बुश हैं। इंद्र की प्रार्थना की गई है कि– प्रकाशमान, कीर्तिशाली एवं परम सुंदर इंद्र अपने सेवक की कामना पूर्ण करने के लिए सदा तैयार रहते है। शत्रुनाशक एवं शक्तिशाली इंद्र ने संसार के अनिष्टकारी दास का मस्तक काटकर नीचे डाल दिया(ऋ 2–19–6)। वृत्रहंता एवं पुरंदर इंद्र ने नीच जाति वाले दासों की सेना को नष्ट किया था। मनु के लिए धरती और जल की रचना करने वाले इंद्र यजमान की महती अभिलाषा को पूर्ण करें। (ऋग्वेद–2–19.7)।

अपनी मुसीबत के समय ब्राम्हण, पुरोहित और सामंत सोमरस (शराब) घोड़े, बैल या गाय का मांस रखकर इंद्र को बुलाते हैं कि हे इंद्र आओ, यज्ञ का साधन एवं इंद्रियों को आनंदित करने वाला सोमरस तुम्हारे समीम जाता है। इस निचोंड़े हुए सोमरस को पियो–(ऋग्वेद 3.122) और हमारी रक्षा करो, क्योंकि हे इंद्र! तुमने एक ही प्रयास में दासों के नब्बे नगरों को कंपित कर दिया था (ऋग्वेद–3.12.5)। हे इंद्र! तुमने इन दस्यु जनों को सब गुणों से हीन किया एवं यज्ञ कर्म रहित को निंदित बनाया। हे इंद्र और सोम! तुम दोनों शत्रुओं को बाधा पहुंचाओ, उन्हें मारो और उनकी हत्या के बदले में यजमानों से पूजा स्वीकार करो (ऋग्वेद 4.28–4)। हे सोम! तुम और इंद्र दोनों ने अश्वों एवं गायों का समूह दान किया। तुमने पणियों द्वारा रोकी गई गायों को एवं उन पाणियों द्वारा रोकी गई गायों को एवं उन पणियों की भूमियों को बल द्वारा छीन लिया था। हे इंद्र एवं सोम! तुम दोनों शत्रुनाशकारियों ने जो किया, वह सत्य है (ऋग्वेद 4–28–5)।

हे धन स्वामी इंद्र! हमारी स्तुति मानकर तुमने देवों को बाधा पहुंचाने वाने वृत्र को व वृज्र से मारते हुए जन्म से ही उसके राक्षस आदि की हिंसा की थी। हे इंद्र! इस युद्ध में तुम मुझ मनु को सुख देने की इच्छा से नमुचि नामक दास का सिर तोड़ दो (ऋग्वेद 5.30.7)। हे इंद्र! जिस प्रकार तुमने गर्जन करने वाले एवं घूमते हुए बादल को नष्ट किया था, उसी प्रकार नमुचि नामक दास का सिर तोड़ कर उसी समय हमारे साथ मित्रता की थी। उस समय मरूतों के भय से धरती और आकाश पहिए की तरह घूमने लगे थे (ऋग्वेद–5–30–7)। नमुचि नामक दास ने स्त्री सैनिकों को युद्ध हेतु भेजा, इंद्र ने उन दोनों को बंदी बनाकर नमुचि से लड़ने चल दिया (ऋग्वेद–5.30. 9)।

दास – दासियों वाले घर के लिए जो दो व्यक्ति लड़ते हैं। उनमें से धन वही पता हैं, जिसके ऋत्विज इंद्र के निमित्त हवन करते हैं (ऋग्वेद 6.25.6)। इंद्र ने वेदविरोधी नास्तिक भेद को मारा था (ऋग्वेद–7.18. 21)। पराशर एवं वशिष्ठ ने इंद्र के साथ मिलकर अनेक दासों को मारा था। (ऋग्वेद 7.18.21)। हे इंद्र! तुमने उस समय शरीर में शुश्रुषा पाकर युद्ध में कुत्स की रक्षा की थी, जिस समय तुमने अर्जुनी के पुत्र कुत्स को धन देते हुए दस शुष्ण और कुयव को वश में किया था (ऋग्वेद 7.19.2)। हे शत्रुनाशक इंद्र! तुम अपने घर्षक वज्र द्वारा रक्षा के सभी साधन प्रयोग में लाकर हव्य देने वाले सुदास को बचाओ। भूमि के कारण होने वाले युद्ध में पुरू कुत्स के पुत्र दस्यु से पुरू की रक्षा करो (ऋग्वेद–7.19.3)। मुझ बुद्धिमान

सेवा में,
नाम .....
पता .....
.....
.....

ब्राम्हण ने गायों और अश्वों के रक्षक बल्बूथ नामक दास से सौ गाएं और सौ घोड़े पाए थे। हे वायु! ये सब लोग तुम्हारे हैं। वे इंद्र एवं देवों द्वारा सुरक्षित एंव प्रसन्न होते हैं (ऋग्वेद 8.46.32)। इस समय महती पूज्या, सामने मुंह करके खड़ी सोने के गहने पहने हुए एवं राज पृथश्रवा द्वारा मेरे लिए दान की गई दासी (युवती) को मेरे सामने लाया जा रहा है (ऋग्वेद–8–46–33)।

वेदों में ब्राम्हणों और पुरोहितों की गरीबी, भुखमरी और दरिद्रता देखते ही बनती है। वे बार–बार दरिद्रता से मुक्ति के लिए इंद्र से निवेदन करते हैं। कामचोरी, दांतनिपोरी और धुर्तता नहीं छोड़ते हैं। हे इंद्र! तुम हमारे में इतनी प्रशंसनीय संपत्ति भर दो कि गांए सागर के जल के समान पर्याप्त मात्रा में हो। हे शुक्र! हम तुम्हारी विजय पर शक्तिशाली बनें। हे वासवः दाता इंद्र! हम जो कामना करें, उसे पूरा करो–(ऋग्वेद 10–38–2)। हे बहुतों द्वारा प्रशंसित इंद्र ! जो दास या राक्षस हमारे साथ युद्ध करना चाहते हैं, वे सब शत्रु तुम्हारी कृपा से हमारे द्वारा सरलता से घर जावें, हम तुम्हारी कृपा से उन्हें युद्ध में मार डालें (ऋग्वेद 10.38.3)।

ब्राम्हण जन इंद्र ही नहीं अग्नि से भी प्रार्थना करते हैं कि बलिष्ठ एवं महा शक्तिशाली दासों से हमारी रक्षा करो, उनके नगरों को नष्ट करों एवं उनका धन छीनकर हमें दो। हे अग्नि! तुमने मानव हितकारी एवं पर्वत पर उत्पन्न धन को दासों से छीनकर आर्यों को दिया। तुम शूर के समान शत्रुजनों के पराभवकारी एवं नाशक बनो तथा आक्रमणकारियों से भिड जाओ (ऋग्वेद–10–69–6)। हे वज्र के समान सारपूर्ण एवं बाण के समान शत्रुनाशक मंथु! जो यजमान तुम्हारी पूजा करते हैं, वह ओज एवं बल धारण करता है एवं संग्राम में सभी शत्रुओं को जीतता है। तुम्हारी सहायता से हम दासों को हरावें (ऋग्वेद–10–83–1)। हे इंद्र! तुम हमारे दाहिनी ओर खड़े जाओ तो हम इस प्रकार से बहुत सारे शत्रुओं को मार डालेंगे (ऋग्वेद 10.83.7)।

ब्राम्हणवाद में वेदकालिक शासन पद्धति में दास मुक्ति का कोई रास्ता नहीं है। हर वैदिक आर्य यह कहता है कि शूद्र (दास) समान का मूलधार है। पर मानता नहीं, उनकी सदियों से उपेक्षा करता आया है। भारतीय इतिहास की सबसे दुखद एवं निंदनीय व्यवस्था है वेदविहित वेदकालीन व्यवस्था। कहने मात्र के लिए ऋग्वेद (5.6.5) कहता है कि न तो कोई बड़ा है, न कोई छोटा। ये सभी परस्पर भ्राता हैं और सौभाग्य अथवा उन्नति के लिए साथ–साथ बढ़ते हैं। किंतु व्यवहार में शून्य हैं। वेद, ब्राम्हण और ब्राम्हणवाद में सबसे बड़ी जो कमी है वह यही है कि इनकी कथनी और करनी में कोई मेल नहीं है, इनका आर्य और शूद्र (दास) का प्यार सिर्फ मेमने और भेड़िये का प्यार है, अवसर मिला और दबोचें

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते भ्रातरो वावृधुः सौभाग्य ऋग्वेद–मंडल–5, सूक्त–60, मंत्र–5

साभार – शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास (पृ.सं. 173 से 181 तक)
एस. के. पंजम